



युवा जीवन

अप्रैल 2026



अपने लोगों के आंसुओं को आशा में और दर्द को चंगाई में बदलने के लिए, आपको जरूरत है...

ज्यासः

प्रस्तावना

यीशु मसीह के अनमोल नाम में, मेरे प्रिय युवा दिलों को पुनरुत्थान दिवस की शुभकामनाएँ!

युवाओं के तौर पर, आप परमेश्वर द्वारा चुने हुए पाल हैं। हर दिन, मैं प्रभु में आनंदित होता हूँ जब मैं देखता हूँ कि परमेश्वर आपका उपयोग कैसे कर रहे हैं। आने वाले दिनों में, परमेश्वर आपको और भी अधिक मज़बूत करना चाहते हैं, आपको सामर्थ्य देना चाहते हैं, और आपका सामर्थ्य रूप से उपयोग करना चाहते हैं।

क्यों? क्योंकि युवाओं की एक बहुत बड़ी भीड़ है जो यीशु को नहीं जानती; ये दर्द और आँसुओं में डूबे बैठे हैं, और सोच रहे हैं: "क्या मुझे जीवन में कभी आज़ादी मिलेगी? क्या पाप के साथ यह संघर्ष कभी खत्म होगा?"

साथ ही, ऐसे भी कई मसीही युवा हैं जो यीशु के बारे में जानते तो हैं, लेकिन उन्होंने कभी सच्चे उद्धार का अनुभव नहीं किया है। ये केवल नाममाल के मसीही बनकर जीते हैं, और संघर्षों, भ्रम और छिपी हुई लड़ाइयों में फँसे रहते हैं।

ऐसी पीढ़ी को खोजने कौन जाएगा?

बाइबल में, हम एक ऐसी ही कहानी देखते हैं। सामरिया के सुखार नगर में, एक स्त्री याकूब के कुएँ पर आई; वह अपने साथ असफलता, निराशा, पाप और खामोश आँसुओं का दर्द लिए हुए थी। लेकिन यीशु जान-बूझकर उस एक आत्मा को खोजने गए। उन्होंने उसके आँसू पोंछे, उसके दर्द को बदल दिया, उसे पाप से आज़ाद किया, और अपने वचन का 'जीवन-जल' देकर उसके आध्यात्मिक रूप से सूखे हृदय में जीवन फूँक दिया।

आज भी, बहुत से युवा उसी प्यास और ललक के साथ खड़े हैं, और पाप तथा बंधन से आज़ादी पाने के लिए बेसब्री से खोज कर रहे हैं।

आप — 'IGNITERS' (इग्नाइटर) — जिन्होंने परमेश्वर की सामर्थ्य और वरदान पाया हैं, आपको पूरे जोश के साथ उठना चाहिए और अपने जीवन के द्वारा परमेश्वर को उनके सामने प्रकट करना चाहिए।

- ◀ जब आप प्रार्थना करेंगे, तो परमेश्वर पाप की उन जंजीरों को तोड़ देंगे जिन्होंने इन युवाओं को जकड़ रखा है।
- ◀ जब आप प्रार्थना करेंगे, तो परमेश्वर बीमारी के गढ़ों को ढा देंगे।
- ◀ जब आप प्रार्थना करेंगे, तो उन अशुद्ध आत्माओं के काम नष्ट हो जाएँगे जो युवाओं को धोखे में फँसाए रखते हैं।

आपकी प्रार्थनाएँ सच्चा बदलाव ला सकती हैं। आपकी प्रार्थनाएँ सच्ची आज़ादी ला सकती हैं।

इसलिए, प्रभु में और उसकी सामर्थ्य की प्रभाव में मज़बूत बनें। आगे बढ़ें और साहसी विश्वास के साथ कार्य करें!

परमेश्वर का अनुग्रह आपके साथ हो!



आपका भाई,

Norman C.L.

जिसने अंधेरी दुनिया में रोशनी देखी!

प्रिय सफल नव जवानों, आपको मेरी ओर से हार्दिक और सेहर्षपूर्ण शुभकामनाएँ!

सच्चे सफलता प्राप्त करने वालों की पहचान बाधाओं से रहित जीवन से नहीं, बल्कि मुश्किलों का सामना करते हुए भी अपने सपनों को न छोड़ने के उनके दृढ़ संकल्प से होती है। वे ही ऐसे लोग होते हैं जो अदृढ़ हृदय के साथ अपने लक्ष्य की ओर लगातार आगे बढ़ते रहते हैं। यहाँ ऐसे ही एक व्यक्ति की प्रेरणादायक कहानी है, जिसने अपनी परिस्थितियों की सीमाओं में बंधने से इनकार कर दिया और इसके बजाय साहस और लगन के बल पर असाधारण ऊँचाईयों को छुआ।

सतेंद्र सिंह का जन्म भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के अमरोहा ज़िले में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। जब वे केवल डेढ़ साल के थे, तब उन्हें निमोनिया हो गया। दुख की बात यह है कि इलाज के दौरान हुई एक चिकित्सीय त्रुटि के कारण, उनकी आँखों की रोशनी पूरी तरह चली गई। जो घटना उम्मीदों का अंत बन सकती थी, वही असाधारण क्षमता की शुरुआत बन गई। हालाँकि वे आँखों की रोशनी के बिना बड़े हुए, लेकिन उन्होंने अपनी आंतरिक दृष्टि को कभी धुंधला नहीं पड़ने दिया। अपने अदृढ़ आत्मविश्वास के साथ, उन्होंने निराशा के बजाय साहस को और आत्म-दया के बजाय दृढ़ संकल्प को चुना।



उन्होंने दृष्टिबाधितों के लिए बने एक सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अपनी शिक्षा पूरी की, जहाँ उन्होंने ब्रेल लिपि में महारत हासिल की और पढ़ाई में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। उनकी विकलांगता ने उनकी पहचान नहीं बनाई — बल्कि उनके अनुशासन ने उन्हें परिभाषित किया।

उनकी अगली बड़ी चुनौती तब सामने आई जब उन्होंने दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज में दाखिला लिया, जहाँ पढ़ाई का माध्यम अंग्रेज़ी था। शुरुआत में, यह उनके लिए एक बड़ी बाधा बन गई। लेकिन घराने के बजाय, उन्होंने इसे पार पाने लायक एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। गहन समर्पण और लगातार प्रयासों के बल पर, उन्होंने केवल एक वर्ष के भीतर ही इस भाषा पर मज़बूत पकड़ बना ली। बाद में उन्होंने भारत के सबसे प्रतिष्ठित संस्थानों में से एक, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से अपनी एम.फिल. की डिग्री पूरी की।

शिक्षक के रूप में काम करते हुए भी, उन्होंने और भी बड़े सपने देखने का साहस किया। उन्होंने UPSC सिविल सेवा परीक्षा को अपना लक्ष्य बनाया — जो देश की सबसे अधिक प्रतिस्पर्धी और कठिन परीक्षाओं में से एक है। ऐसी परीक्षा की तैयारी करना उन लोगों के लिए भी चुनौतीपूर्ण होता है, जिनके पास सभी शारीरिक क्षमताएँ मौजूद होती हैं। फिर भी, सतेंद्र ने एक दृष्टिबाधित उम्मीदवार के तौर पर 'स्क्रीन-रीडर' तकनीक की मदद से परीक्षा की तैयारी की; और यह साबित कर दिया कि जब दृढ़ संकल्प साथ हो, तो सीमाओं को भी सफलता के साधन में बदला जा सकता है।

हालाँकि उन्हें वर्ष 2016 में और फिर 2017 में असफलता का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने निराशा को अपनी नियति तय करने का अधिकार कभी नहीं दिया। हार मानने के बजाय, उन्होंने अपनी तैयारी को और बेहतर बनाया, अपनी सोच को मज़बूत किया, और 2018 में फिर से कोशिश की। इस बार, उनकी लगन रंग लाई — उन्हें 714 की ऑल इंडिया रैंक मिली, और वे हिम्मत और कामयाबी की एक सच्ची मिसाल बन गए।

प्रिय युवा मिलों,

सतेंद्र सिंह ने कभी भी यह बात नहीं मानी कि “मैं यह नहीं कर सकता।” इसके बजाय, उन्होंने एक कहीं ज़्यादा दमदार सवाल पूछा: “मैं यह कैसे कर सकता हूँ?”

अपनी आँखों की रोशनी न होने के बावजूद, उन्होंने निराशा के बजाय ध्यान लगाना चुना; अपनी सीमाओं में बँधने के बजाय सीखना चुना; और दबाव में आने के बजाय डटे रहना चुना। उन्होंने पढ़ाई में महारत हासिल की, भाषा की रुकावटों को पार किया, और भारत की सबसे मुश्किल परीक्षाओं में से एक को पास कर दिखाया।

आज उनकी कहानी आपको चुनौती दे:

अपनी मुश्किलों को बहाना मत बनाओ। उन्हें आगे बढ़ने की सीढ़ियाँ बनाओ।

आगे बढ़ते रहो, भले ही तुम्हें लगे कि तुम्हारी तरक्की बहुत धीमी है। कामयाबी मिलने में कभी-कभी देर हो सकती है, लेकिन सच्ची मेहनत कभी बेकार नहीं जाती, और जो इंसान डटा रहता है, उसे कभी खाली हाथ नहीं लौटना पड़ता।

कोशिश करने की हिम्मत रखो। डटे रहने की हिम्मत रखो। यह साबित करने की हिम्मत रखो कि तुम क्या-क्या कर सकते हो।

मेहनत करते रहो — और दुनिया को दिखा दो कि एक पक्के इरादे वाली ज़िंदगी के ज़रिए परमेश्वर क्या-क्या कर सकते हैं।

प्यास!!

जिस तरह हमारे शरीर के स्वास्थ्य के लिए भोजन और पानी ज़रूरी हैं, उसी तरह भूख और प्यास इसकी ज़रूरतों के प्राकृतिक संकेत हैं। जब हमें प्यास लगती है, तो हम तुरंत पानी ढूंढते हैं और तब तक पीते हैं जब तक हमारी प्यास बुझ नहीं जाती। ठीक इसी तरह, अपनी आत्मा की प्यास बुझाने के लिए, हमें परमेश्वर को खोजना चाहिए।

दाऊद ने अपनी जवानी से ही परमेश्वर को खोजा। उसे परमेश्वर के साथ एक करीबी और गहरा रिश्ता बनाने की तीव्र इच्छा थी। न केवल उसकी आत्मा, बल्कि उसका शरीर भी परमेश्वर को जानने के लिए तरसता था।

“हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा; सुखी और निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है; मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है” (भजन संहिता 63:1)।

जब हम परमेश्वर को किसी कर्तव्य के तौर पर नहीं, बल्कि सच्ची प्यास के साथ खोजते हैं, तो हमारी आत्मा की गहरी प्यास बुझ जाएगी।

दाऊद अच्छी तरह समझता था कि परमेश्वर की उपस्थिति में रहना, शरीर के लिए पानी से भी ज्यादा ज़रूरी है। इसीलिए वह अति भोर परमेश्वर को खोजता था। चाहे उसे कितनी भी परीक्षाओं, संघर्षों, दबावों या नुकसानों का सामना करना पड़ा हो, दाऊद ने कभी भी प्रभु को खोजना नहीं छोड़ा। हर स्थिति में, उसने परमेश्वर पर भरोसा करना और उसका पीछा करना चुना।



इसी तरह, आपके जीवन में चाहे जैसी भी परिस्थितियाँ क्यों न आएँ, प्रभु को खोजना कभी न छोड़ें। आपकी आत्मा और शरीर जितना ज़्यादा उसके लिए तरसेंगे, आपको उतनी ही ज़्यादा सामर्थ मिलेगी।

“मेरी आत्मा परमेश्वर के लिए, जीवित परमेश्वर के लिए प्यासी है। मैं कब परमेश्वर के सामने आकर उपस्थित होऊंगा?” (भजन संहिता 42:2)।

जिस तरह दाऊद रोज़ाना परमेश्वर के लिए प्यासा रहता था, जब आपकी आत्मा भी उसी तरह परमेश्वर के लिए प्यासी होने लगेगी, तो आप इस दुनिया में भी एक विजयी जीवन जिएंगे।

यीशु ने इस धरती पर एक विजयी जीवन इसलिए जिया, क्योंकि वह लगातार अपने पिता को खोजता रहता था। जब आप यीशु को खोजते हैं, तो उसका स्वभाव आप में झलकने लगता है। जिस तरह उसे नाश होती हुई आत्माओं के लिए गहरी प्यास थी, उसी तरह आप भी आत्माओं के लिए एक बोझ और प्यास महसूस करने लगेंगे।



यहूदी लोग सामरियों से नफ़रत करते थे। फिर भी यीशु एक कुएं के पास इंतज़ार करता रहा, ताकि वह एक सामरी स्त्री की आध्यात्मिक प्यास बुझा सके, जो एक तिरस्कृत समुदाय से थी। यीशु के लिए, शारीरिक प्यास से ज़्यादा आध्यात्मिक प्यास मायने रखती थी।

वह अपनी शारीरिक प्यास बुझाने के लिए पानी भरने आई थी। लेकिन यीशु ने उसकी आत्मा के सूखेपन और उसके हृदय में छिपी गहरी तड़प को देख लिया। उन्होंने अपना परिचय ‘जीवन के जल’ के रूप में दिया, जो अकेले ही उसकी प्यास बुझा सकते थे। जहाँ वह अपनी शारीरिक प्यास बुझाने आई थी, वहीं प्रभु ने उसे अपनी आत्मा की प्यास बुझाने का मार्ग दिखाया।

यीशु ने कहा, “जो कोई वह जल पियेगा जो मैं उसे दूँगा, वह फिर कभी प्यासा न होगा। जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसके भीतर एक ऐसा जल का सोता बन जाएगा जो उमड़कर अनन्त जीवन तक पहुँचेगा” (यूहन्ना 4:14)।

जब यीशु मसीह द्वारा उसकी प्यास बुझ गई, तो उस सामरी स्त्री ने उनके प्रति अपने प्रेम के कारण, दौड़कर अपने गाँव की ओर वापसी की। जिन लोगों ने कभी उसे नीची नज़रों से देखा था, उन्हीं को उसने आकर यीशु को देखने के लिए आमंत्रित किया। उसने बड़े साहस के साथ गवाही दी कि यीशु ने उसके जीवन में क्या किया था, और उसने बहुतों को उद्धार की ओर अग्रसर किया।

आरम्भ में, उसने यीशु को एक यहूदी के रूप में देखा। फिर उसने उन्हें एक भविष्यवक्ता के रूप में पहचाना। अन्ततः, उसे यह बोध हुआ कि वे ही मसीहा हैं, जो उसे पाप से बचाने के लिए आए थे।

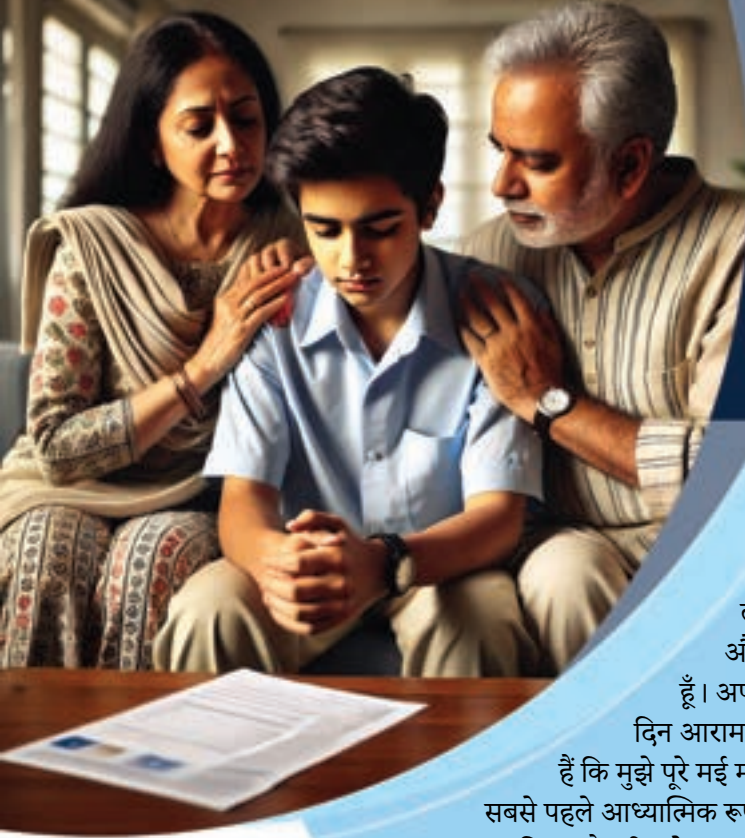
“उस नगर के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री की गवाही के कारण उन पर विश्वास किया” (यूहन्ना 4:39)।

मेरे प्रिय युवा मित्रों! यह संसार एक गहरी आत्मिक प्यास से पीड़ित है। परमेश्वर ने हमें जो सबसे अनमोल खज़ाना दिया है, वह उनका पुत्र, यीशु है। यदि आप प्रतिदिन परमेश्वर की खोज करेंगे—भले ही प्रार्थना के लिए केवल एक घंटा ही क्यों न निकालें—तो वे आपके साथ-साथ चलेंगे।

उस सामरी स्त्री की ही भाँति, आत्माओं के लिए एक गहरी प्यास लेकर उठिए, और दूसरों की प्यास बुझाने के लिए निकल पड़िए! यीशु ने आपके लिए जो कुछ किया है, उसकी गवाही दूसरों के साथ साझा कीजिए! प्रभु आपके साथ रहेंगे और बहुतों की प्यास बुझाने के लिए आपका उपयोग करेंगे!!



जब माता-पिता योजनाएँ बनाते हैं!!



प्रिय भाई आकाश,

तुम्हारे सपनों और लक्ष्यों को देखकर मुझे सचमुच बहुत खुशी हुई। खासकर ऐसे समय में जब कई छात्र अपनी हायर सेकेंडरी की पढ़ाई यह जाने बिना ही पूरी कर लेते हैं कि उन्हें आगे क्या करना है, बिना किसी स्पष्ट दिशा के; तुमने तो पहले से ही योजना बना ली है कि +1 में कौन सा ग्रुप लेना है, कौन सी डिग्री हासिल करनी है, और आजकल कौन से कोर्स चलन में हैं। यह तुम्हारी स्पष्टता और एकाग्रता को दर्शाता है। मैं इसके लिए तुम्हारी सराहना करता हूँ।

साथ ही, मैं तुम्हारी निराशा को भी समझ सकता हूँ कि मई महीने की छुट्टियों की तुम्हारी योजनाएँ शायद इसलिए धरी की धरी रह गई हैं, क्योंकि तुम्हारे माता-पिता इस बात

मैं 10वीं कक्षा में पढ़ रहा हूँ। मेरे कई सपने और लक्ष्य हैं। मैं अच्छे अंक लाना चाहता हूँ, 11वीं कक्षा में कंप्यूटर साइंस ग्रुप चुनना चाहता हूँ, कॉलेज में B.Sc. कंप्यूटर साइंस प्रोग्राम में दाखिला लेना चाहता हूँ, किसी IT कंपनी में नौकरी पाना चाहता हूँ, और बाद में डेटा साइंस में विशेषज्ञता हासिल करना चाहता हूँ। अपनी 10वीं की परीक्षाओं के बाद, मैंने सोचा था कि मैं कुछ दिन आराम करूँगा और मज़े करूँगा। लेकिन मेरे माता-पिता कह रहे हैं कि मुझे पूरे मई महीने VBS में शामिल होना ही होगा। वे कहते हैं कि मुझे सबसे पहले आध्यात्मिक रूप से मज़बूत बनना चाहिए, परमेश्वर के साथ अपना रिश्ता बनाना चाहिए, और यीशु के साथ एक व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त करना चाहिए। जब मैं यह सुनता हूँ, तो मुझे चिढ़ और गुस्सा आता है। इसी वजह से, हमारी हमेशा बहस होती रहती है। मैंने तो अपने पिता से बात करना भी बंद कर दिया है। ज़्यादातर समय मैं बस अपने कमरे में अकेला बैठा रहता हूँ। मेरे माता-पिता मुझे क्यों नहीं समझ पाते? क्या मुझे हमेशा सिर्फ उनकी योजनाओं को ही मानना पड़ेगा? वे मेरी योजनाओं को भी क्यों नहीं सुन सकते?

— आकाश, लिची

पर ज़ोर दे रहे हैं कि तुम VBS में शामिल हो। आज भी, माता-पिता और बच्चों के बीच कई झगड़ों, गलतफहमियों और भावनात्मक दूरी का कारण बहुत सीधा-सा है: सिक्के का सिर्फ एक ही पहलू देखना। हम अक्सर दूसरे पहलू को देखना भूल जाते हैं। सबसे पहले, आइए हम यह समझने की कोशिश करें कि उनकी अपेक्षाएँ क्या हैं। उसके बाद हम तय कर सकते हैं कि हमें किस तरह से प्रतिक्रिया देनी है।

एक मसीही माता-पिता की अपेक्षा



यीशु के साथ व्यक्तिगत अनुभव इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

एक मसीही माता-पिता की आमतौर पर यही इच्छा होती है:

- कि उनका बेटा हायर सेकेंडरी में दाखिला लेने से पहले ही, परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत रिश्ता बना ले।
- कि वह अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को समझ ले।
- कि पढ़ाई में सफल होने और इस दुनिया में एक अनुशासित जीवन जीने के लिए, उसे आध्यात्मिक सामर्थ्य की आवश्यकता है (और यह सामर्थ्य केवल परमेश्वर के साथ प्रतिदिन संगति करने से ही मिलती है)।
- कि उसे अपने हृदय की रक्षा करना सीखना चाहिए और पाप से दूर रहने की आदत डालनी चाहिए।
- कि उसे उस सुंदर भविष्य तक पहुँचना चाहिए जिसकी योजना परमेश्वर ने उसके लिए बनाई है, और एक ऐसी गवाही के रूप में जीना चाहिए जो परमेश्वर की महिमा करे।



दिया। उस क्रोध ने उसे अपने ही भाई के विरुद्ध पाप करने पर मजबूर कर दिया और उसे परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर दिया।

आप शायद यह सोच रहे होंगे:

► “क्या मुझे अपनी ज़िंदगी जीना नहीं आता? परमेश्वर ने मुझे बुद्धि दी है। मुझे पता है कि क्या करना है और क्या नहीं।”

► “मेरे पास आत्मबल है। मैं अपनी +1, +2, और कॉलेज की ज़िंदगी के दौरान किसी भी प्रलोभन पर काबू पा सकता हूँ। मैं आसानी से अपने लक्ष्य हासिल कर सकता हूँ।”

► लेकिन ठीक यहीं पर कई युवा लोग गलती कर बैठते हैं। उन्हें लगता है कि वे अपनी स्वयं की ताकत से सफल हो सकते हैं। वे कोशिश करते हैं। वे संघर्ष करते हैं। कई असफल हो जाते हैं। और धीरे-धीरे, वे परमेश्वर के उद्देश्य से दूर हो जाते हैं।

इन उदाहरणों पर विचार करें:

शिमशोन - उसे विश्वास था कि उसकी शारीरिक ताकत ही काफी है। लेकिन वह अपनी शारीरिक इच्छाओं पर काबू नहीं पा सका और अंततः गिर गया।

कैन - उसने अपने गलत विचारों को क्रोध में बदलने



गेहजी – सांसारिक लाभ की उसकी इच्छा के कारण उसे एक सामर्थी भविष्यवाणी की सेवकाई गंवानी पड़ी और वह परमेश्वर से दूर हो गया।

जिन लोगों को विश्वास था कि वे अपनी स्वयं की ताकत पर खड़े रह सकते हैं, वे अंततः गिर गए और परमेश्वर की उपस्थिति से दूर चले गए।

यही कारण है कि आपके माता-पिता चाहते हैं कि आप परमेश्वर के साथ एक रिश्ता बनाएँ, ताकि आप जीवन में सचमुच सफल हो सकें और चमक सकें।

एक सरल सुझाव:

क्यों न आप सिर्फ इस बार VBS में शामिल हों? इस एक महीने का उपयोग स्वयं को आध्यात्मिक रूप से तैयार करने के लिए करें, और फिर पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी शैक्षणिक यात्रा शुरू करें। परमेश्वर आपके साथ रहेगा और आपको सामर्थ्य देगा। “परमेश्वर स्वर्ग से मनुष्यों पर दृष्टि की, कि देखे कि कोई बुद्धिमान, कोई परमेश्वर का खोजी है या नहीं। सभी भटक गए हैं... कोई भी ऐसा नहीं है जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।” (भजन संहिता 14:2-3)

“इसी कारण मैं ने सब से पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया। और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया। “(1 कुरिन्थियों 15:3-5)

यहूदी रीति-रिवाजों के अनुसार, यीशु के शरीर को सनी के कपड़े में लपेटा गया और एक चट्टान को तराशकर बनाई गई कब्र में रख दिया गया। कब्र के प्रवेश द्वार पर एक विशाल पत्थर लुढ़काकर लगा दिया गया। पृथ्वी पर अपने समय के दौरान, यीशु ने

स्पष्ट रूप से घोषणा की थी, “मैं मरूंगा, दफनाया जाऊंगा, और तीसरे दिन मैं फिर से जीवित हो उठूंगा।” ठीक जैसा उन्होंने वादा किया था, उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त की और फिर से जीवित हो उठे।

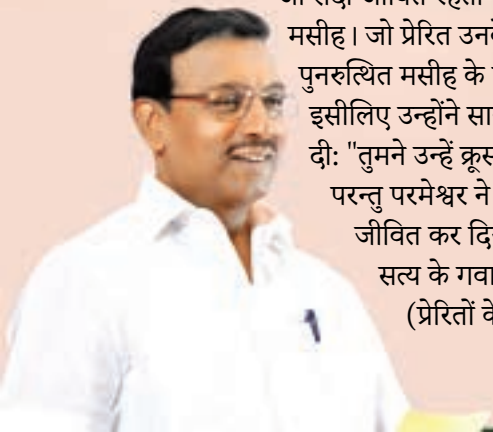
आज भी, यरूशलेम में वह कब्र जहाँ यीशु को दफनाया गया था, खुली खड़ी है, और खामोशी से इस सामर्थी सत्य की गूंज सुना रही है: “वह यहाँ नहीं हैं; वह जीवित हो उठा है!”

पुनरुत्थित
यीशु,
जो स्वयं को प्रकट
करते हैं!

विश्व के संपूर्ण इतिहास में, केवल एक ही व्यक्ति ऐसा है जो मरा, दफनाया गया, जिसने मृत्यु पर विजय प्राप्त की, और जो सदा जीवित रहता है — यीशु मसीह। जो प्रेरित उनके साथ चले, वे पुनरुत्थित मसीह के प्रत्यक्षदर्शी बने। इसीलिए उन्होंने साहसपूर्वक गवाही दी: “तुमने उन्हें क्रूस पर चढ़ाया, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से जीवित कर दिया, और हम इस सत्य के गवाह हैं” (प्रेरितों के काम 2:32)।

किसी मृत व्यक्ति को परमेश्वर घोषित करने की कोई जरूरत नहीं है। परमेश्वर कहलाने के योग्य केवल वही है जो मरा, और फिर भी सदा जीवित रहता है — स्वर्ग और पृथ्वी का सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता। इस संसार में, वह एकमात्र सच्चा परमेश्वर केवल यीशु मसीह ही हैं। इसीलिए यीशु ने घोषणा की: “मैं मरा हुआ था, और देखो, मैं सदा के लिए जीवित हूँ” (प्रकाशितवाक्य 1:18)।

केवल यीशु मसीह ही वह परमेश्वर हैं जिन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त की (1 कुरिन्थियों 15:14)। अपने पुनरुत्थान के बाद, उन्होंने अपने शिष्यों के माध्यम से कार्य करना जारी रखा।



जहाँ कहीं भी यीशु का संदेश सुनाया गया, वहाँ चमत्कार हुए, जिससे यह सिद्ध हुआ कि वह जीवित हैं (मरकुस 16:20)।

ठीक वैसे ही जैसे जब यीशु शारीरिक रूप से पृथ्वी पर विचरण करते थे तब चमत्कार होते थे, वैसे ही चमत्कार उनके शिष्यों के माध्यम से भी होते रहे। क्यों? शिष्यों की महिमा करने के लिए नहीं, बल्कि यह प्रकट करने के लिए कि जिस यीशु का वे प्रचार करते थे, वे जीवित हैं। इन चमत्कारों के माध्यम से, यीशु ने स्वयं को संसार के सामने प्रकट किया।

एक नौजवान की सच्चे परमेश्वर के लिए खोज

पंजाब के लुधियाना में, सुंदर नाम का एक लड़का एक बहुत ही धार्मिक सिख परिवार में पैदा हुआ। उसकी माँ बहुत ही धार्मिक थी और उसने सुंदर की परवरिश बहुत ही मज़बूत आध्यात्मिक अनुशासन के साथ की। बहुत छोटी उम्र से ही, सुंदर ने धार्मिक ग्रंथों में गहरी दिलचस्पी दिखाई, खासकर भगवद् गीता में। सात साल की उम्र तक तो उसने इसे जुबानी याद करना भी शुरू कर दिया था।

लेकिन, जल्द ही उस पर एक बड़ी मुसीबत आ पड़ी। सुंदर ने अपनी माँ को तब खो दिया जब वह अभी बहुत छोटा ही था। उसकी माँ की मौत ने उसके हृदय को पूरी तरह तोड़ दिया। अपने गहरे दुख में, उसकी आत्मा उस परमेश्वर को खोजने लगी जिसके बारे में उसकी माँ ने उसे बताया था — वह परमेश्वर जो उसे सच्चा सुकून दे सकता था।

उसने अलग-अलग धर्मों की किताबें पढ़ना शुरू कर दिया, और पूरी ईमानदारी से सच्चाई की खोज करने लगा। गहरी चाहत के साथ उसने कहा:

“ज़रूर कोई ऐसा परमेश्वर होगा जिसने इस पूरे ब्रह्मांड को बनाया है। मैं उसे देखना चाहता हूँ। वह कोई भी हो, मुझे उसे ढूँढ़ना ही होगा। सिर्फ़ वही मुझे सच्चा सुकून और शांति दे सकता है।”

महीनों तक उसने बड़ी चाहत से खोज की। फिर भी उसे कहीं भी शांति नहीं मिली। आखिरकार, पूरी तरह निराश होकर, उसने अपनी ज़िंदगी बदलने वाला एक फैसला किया:

“अगर सचमुच कोई सच्चा परमेश्वर है, तो वह आज रात मुझे अपने दर्शन दे। नहीं तो, मैं अपनी जान दे दूँगा।”

उसने पूरी रात इंतज़ार किया। फिर, सुबह के बहुत ही शुरुआती घंटों में, ठीक उसी आखिरी पल, अचानक उसके कमरे में एक बहुत तेज़ रोशनी फैल गई।

उस रोशनी में, उसे यीशु के दर्शन हुए — वही यीशु जिसे सलीब पर कीलों से ठोक दिया गया था।

यीशु ने उसे अपने दर्शन दिए और कहा:

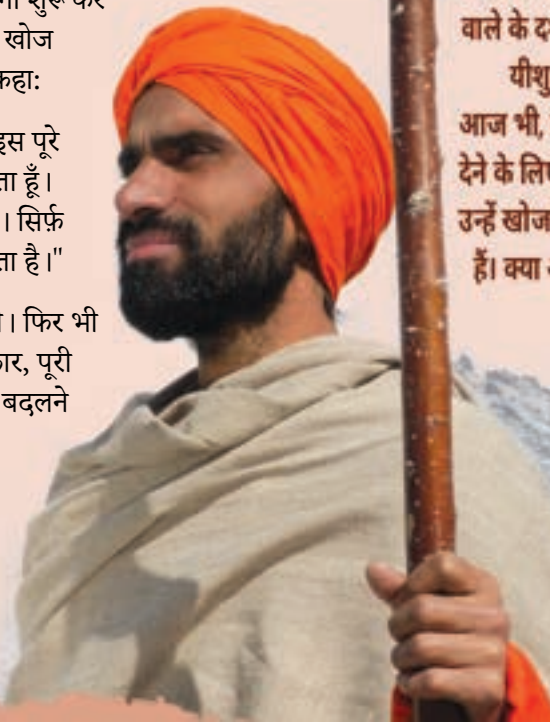
“सुंदर, मैं ही वह परमेश्वर हूँ जिसे तुम खोज रहे हो — स्वर्ग और पृथ्वी का बनाने वाला। मैं ही वह हूँ जो तुम्हारे लिए सलीब पर मरा और तुम्हारे सारे पाप अपने ऊपर ले लिए।”

सुंदर को यीशु के आने की बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी। वह पूरी तरह हैरान रह गया। लेकिन जब उसका सामना मरे हुएओं में से जी उठे मसीह से हुआ, तो उसने अपनी पूरी ज़िंदगी पूरी तरह से यीशु को ही सौंप दी।

उस दिन के बाद से, उसने कभी शादी न करने का फैसला किया और ‘साधु सुंदर सिंह’ के नाम से मशहूर हो गया। उसने पूरे भारत और दुनिया के कई देशों में घूम-घूमकर, परमेश्वर के एक सेवक के तौर पर यीशु का संदेश फैलाने में अपनी पूरी ज़िंदगी लगा दी।

आपके लिए एक सवाल

मेरे प्रिय नौजवान मित्र, सुंदर के हृदय में परमेश्वर को पाने की एक गहरी प्यास थी। क्योंकि वह सचमुच अपने बनाने वाले के दर्शन करना चाहता था, इसलिए यीशु ने उसे अपने दर्शन दिए। आज भी, यीशु उन लोगों को अपने दर्शन देने के लिए तैयार हैं जो पूरी ईमानदारी से उन्हें खोजते हैं और उन पर विश्वास करते हैं। क्या आप में यीशु को पाने की वही प्यास है?





बाइबल खोज



हे दुनिया बदलने युवाओं!

हमारा मानना है कि बाइबल की पृथुभूमि को समझना आपके अध्ययन के अनुभव को कहीं ज्यादा सार्थक और सामर्थी बना देता है। इस महीने, आइए हम यहोशू, न्यायियों और रूत की कहानियों की गहराई में उतरें!

कहानी की झलक

यहोशू:

मूसा की मृत्यु के बाद, यहोशू पूरे साहस के साथ उठ खड़ा होता है ताकि इस्राएल के लोगों को 'प्रतिज्ञा किए गए देश' (Promised Land) तक ले जा सके।

परमेश्वर उसे आज्ञा देता है, "हियाव बाँध और टूट हो जा," और हर कदम पर व्यक्तिगत रूप से उसका मार्गदर्शन करता है।

इस्राएली यरदन नदी पार करते हैं और कनान देश पर अधिकार करना शुरू करते हैं।

एक ऐसा क्षण जो तर्क-बुद्धि से परे है: यरीहो की दीवारें ढह जाती हैं—इंसानी ताकत से नहीं, बल्कि परमेश्वर के असाधारण निर्देशों का पूरी तरह से पालन करने के कारण।

यहोशू लोगों को याद दिलाता है: यह जीत हमारी नहीं—यह परमेश्वर की है।

न्यायियों:

यह एक ऐसा चक्र है जिसे हम नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते।

इस्राएली परमेश्वर को भूल जाते हैं... पाप में पड़ जाते हैं... उसके परिणाम भुगतते हैं... परमेश्वर को पुकारते हैं... और परमेश्वर उन्हें बचाने के लिए एक 'न्यायी' (Judge) खड़ा करता है। शांति लौट आती है—कुछ समय के लिए। लेकिन फिर वे दोबारा पाप में पड़ जाते हैं। यह असफलता और अनुग्रह का एक दोहराया जाने वाला चक्र है।

मुख्य अगुवे: दबोरा, शिमशोन, गिदोन।

रूत:

रूत, एक विधवा मोआबी स्त्री, एक साहसी फैसला लेती है—न केवल अपनी सास नाओमी के प्रति, बल्कि नाओमी के परमेश्वर के प्रति भी वफ़ादार रहने का। वह अपनी जानी-पहचानी हर चीज़ को पीछे छोड़ देती है और बेतलहम में कदम रखती है, जहाँ वह गुजारा करने के लिए खेतों में नम्रता से काम करती है। वहाँ उसकी मुलाकात बोअज़ से होती है—जो उसका उद्धारकर्ता बन जाता है। लेकिन यहाँ कहानी में एक बड़ा मोड़ आता है:

रूत राजा दाऊद की परदादी बनती है... और स्वयं यीशु मसीह के वंश का हिस्सा बन जाती है!

उसकी कहानी यह साबित करती है: यहाँ तक कि शांत और साधारण पलों में भी, परमेश्वर परदे के पीछे रहकर काम कर रहा होता है।

यह याद रखें:

यहोशू, न्यायियों और रूत की कहानियाँ विश्वास के बारे में तीन सच्ची सच्चाइयों को उजागर करती हैं:

1. विश्वास के लिए साहस की आवश्यकता होती है।
2. परमेश्वर से दूर चले जाने का परिणाम अराजकता और संघर्ष होता है।
3. विश्वास हमेशा उद्धार की ओर ले जाता है।

यहाँ तक कि जब हम कोई गलती कर बैठते हैं, तब भी यदि हम परमेश्वर पर भरोसा करने का चुनाव करते हैं, तो वह हमारे द्वारा और हमारे भीतर अपनी योजना को पूरा करना जारी रखता है।

रूत के एक विश्वासपूर्ण फैसले के कारण, परमेश्वर ने एक ऐसी विरासत तैयार की जो राजा दाऊद तक—और अंततः हमारे प्रभु यीशु मसीह तक पहुँची। आपकी कहानी शायद आपको छोटी सी लगे... लेकिन परमेश्वर के हाथों में, वह अनंतकाल को आकार दे सकती है।



हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 31/05/2026 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा। कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।



संपर्क संख्या : +919750955548



Jesus Redeems - Hindi



Comforter
DIGITAL CHANNEL

www.comfortertv.com

युवा जीवन

यीशु उद्धार करता है युवा तंबू के माध्यम से "युवा जीवन" नामक मासिक पत्रिका तमिल, अंग्रेज़ी, हिंदी, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़ और बांग्ला भाषाओं में प्रकाशित की जा रही है।

हर महीने प्रकाशित होने वाली युवा जीवन पत्रिका को आप प्राप्त करना चाहते हैं तो किस भाषा में चाहिए, उस भाषा के सामने टिक करके उस भाग का फोटो लेकर अपनी स्पष्ट पता विवरण के साथ हमें व्हाट्सएप करें।



+91 9750955548



youth@jesuredeems.org



Thirst

इन बाइबल नायकों की परमेश्वर के लिए आध्यात्मिक प्यास

यशायाह की परमेश्वर के लिए प्यास

नबी यशायाह के मन में परमेश्वर के वचन और उसकी धार्मिकता के लिए गहरी भूख थी। परमेश्वर को बार-बार “इस्राएल का पवित्र जन” कहकर संबोधित करके, उसने परमेश्वर के प्रति अपना गहरा आदर और उत्कट भक्ति प्रकट की। वह इस दृढ़ विश्वास के साथ जिया कि उसे केवल वही बोलना चाहिए जो परमेश्वर ने उसे बोलने की आज्ञा दी थी। यशायाह के मन में एक ऐसी अतृप्त लगन थी कि लोग पाप से मुड़ें और परमेश्वर के पास लौट आएं।



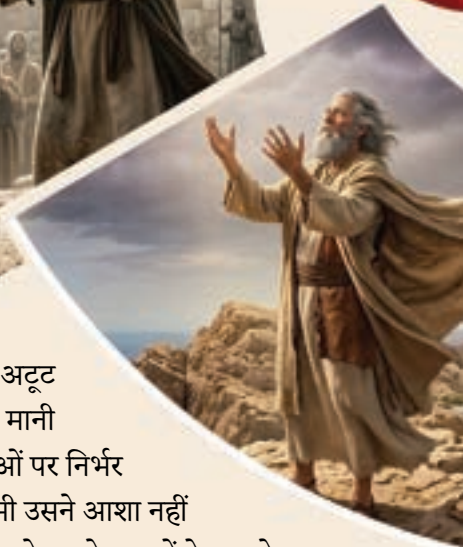
यिर्मयाह की परमेश्वर के लिए प्यास

यिर्मयाह के मन में लोगों को पश्चाताप करते और परमेश्वर के पास लौटते देखने की गहरी लालसा थी। अपनी जवानी से ही परमेश्वर द्वारा चुने गए, उन्हें उनकी तीव्र आध्यात्मिक लगन के कारण नबूवत के कार्य के लिए बुलाया गया था। उनका दृढ़ विश्वास था कि प्रभु ही सच्चा और जीवित परमेश्वर तथा सनातन राजा है। अस्वीकृति और विरोध का सामना करते हुए भी, यिर्मयाह ने बिना किसी डर के परमेश्वर के संदेश का साहसपूर्वक प्रचार किया।



एलियाह की परमेश्वर के लिए प्यास

जब इस्राएल के लोग सच्चे परमेश्वर से विमुख हो गए, तब एलियाह प्रभु के लिए अटूट उत्साह के साथ खड़ा रहा। उसने बिना किसी हिचकिचाहट के परमेश्वर की आज्ञा मानी — चाहे इसका अर्थ किसी अनजान जगह पर जाना हो, या भोजन के लिए कौओं पर निर्भर रहना हो। यहाँ तक कि जब उसे वर्षा के लिए सात बार प्रार्थना करनी पड़ी, तब भी उसने आशा नहीं छोड़ी और परमेश्वर के वादे पर दृढ़ता से कायम रहा। इसी आध्यात्मिक लगन ने उसे अपने शत्रुओं के सामने भी परमेश्वर की महिमा करने का साहस प्रदान किया।



दाऊद की परमेश्वर के लिए प्यास

उन दिनों में भी जब वह शाऊल से भाग रहा था और जंगल में रह रहा था, दाऊद पूरे मन से परमेश्वर की खोज करता रहा। उसकी सबसे बड़ी इच्छा परमेश्वर की उपस्थिति में निरंतर बने रहना थी। उसने अपनी आत्मा की तुलना पानी के लिए प्यासे हिरण से की, और इस प्रकार परमेश्वर के लिए अपनी गहरी लालसा व्यक्त की (भजन संहिता 63:1)। सामर्थ, विजय या सुख-सुविधाओं से कहीं बढ़कर, उसकी सबसे बड़ी अभिलाषा परमेश्वर की उपस्थिति में बने रहना था।

सामरी स्त्री की यीशु के लिए प्यास

समाज द्वारा ठुकराई गई उस स्त्री का जीवन उस क्षण पूरी तरह से बदल गया, जब उसकी भेंट मसीह से हुई। अपनी पानी की सुराही वहीं छोड़कर, वह यीशु के बारे में खुशखबरी सुनाने के लिए दौड़कर अपने नगर वापस गई। अपने पुराने जीवन से मुड़कर, उसके मन में सच्चे परमेश्वरीय प्रेम और अनंत जीवन के लिए प्यास जाग उठी। इसी प्यास ने उसे एक सुसमाचार प्रचारक में बदल दिया और अनेक लोगों को विश्वास की ओर अग्रसर किया।

ज़क्कई की परमेश्वर को जानने की प्यास

अपनी छोटी कद-काठी के कारण, ज़क्कई भीड़ के बीच से यीशु को देख नहीं पा रहा था। लेकिन यीशु को देखने की उसकी तीव्र इच्छा ने उसे एक गूलर के पेड़ पर चढ़ने के लिए प्रेरित किया। उसकी इस उत्कंठा को देखकर, यीशु ने उसे व्यक्तिगत रूप से पुकारा और कहा, “नीचे उतर आओ।” ज़क्कई ने तुरंत जवाब दिया, नीचे उतरा, और अपने पापों का पश्चाताप किया। वह अपनी संपत्ति का आधा हिस्सा गरीबों को देने के लिए भी तैयार हो गया, जिससे उसके हृदय-परिवर्तन की सच्चाई सिद्ध हो गई। यह वही आध्यात्मिक भूख थी जिसने न केवल उसे उद्धार दिलाया, बल्कि यीशु को उसके घर में आने का निमंत्रण भी दिया।

एक सत्य इन सभी जीवनों को आपस में जोड़ता है: जो लोग सचमुच परमेश्वर के लिए प्यासे होते हैं, वे हमेशा उससे मिलते हैं। आज के युवाओं के लिए असली सवाल यह है: क्या हमारे भीतर भी वैसी ही प्यास है?

तनावग्रस्त

Event: Lentil

हेलो मित्रों,

आप सब कैसे हैं? मुझे इस श्रृंखला 'तनावग्रस्त' (Under Pressure) के ज़रिए आपसे फिर से मिलकर बहुत खुशी हो रही है!

पिछले महीने, हमने देखा था कि जब जैतून के बीजों पर दबाव डाला जाता है, तो उनसे कितनी कीमती चीज़ निकलती है — जैतून का तेल।

तो... इस महीने हम किस बारे में बात करने वाले हैं? कोई अंदाज़ा है मित्रों?

क्या आपने कभी ऐसी स्थितियों का सामना किया है, जब आपको लगा हो कि आपके आस-पास के सारे दरवाज़े बंद हो गए हैं? ऐसे समय, जब तनाव इतना ज़्यादा था कि आपको आगे बढ़ने का कोई रास्ता ही नहीं दिख रहा था? अगर हाँ — तो यह श्रृंखला खास तौर पर आपके लिए ही है। ठीक है, चलिए शुरू करते हैं।

इस महीने, हम गेहूँ के एक दाने पर नज़र डालेंगे।

आमतौर पर, गेहूँ का दाना पौधे की डंठल से जुड़ा रहता है। वह वहाँ आराम से रहता है, बिना किसी संघर्ष के; वह अपने पोषण और पानी के लिए पूरी तरह से डंठल पर ही निर्भर रहता है। क्या हममें से कुछ लोग भी ऐसे ही नहीं जीते? कुछ चीज़ों के लिए दूसरों पर निर्भर रहना, क्योंकि ऐसा करना सुरक्षित और आरामदायक लगता है। लेकिन सच्चाई यह है...

अगर गेहूँ का दाना डंठल से ही जुड़ा रहता है, तो वह अपनी पूरी ज़िंदगी बस एक बीज बनकर ही रह जाएगी। आखिर में, वह शायद सड़ जाए, या फिर उसे चिड़िया या जानवर खा जाएँ।

लेकिन बाइबल में यूहन्ना 12:24 में कहा गया है:

गेहूँ का एक दाना तब तक अकेला ही रहता है, जब तक वह ज़मीन पर गिरकर मर नहीं जाता; लेकिन अगर वह मर जाता है, तो उससे बहुत फल आता है।

हाँ, अगर उसे फलदार बनना है, तो उसे "मरना" ही होगा। इसका मतलब है कि उसे दबाव भरी स्थितियों से गुज़रना होगा। उसे उस माहौल से बाहर निकलना होगा, जो उसे सुरक्षित, जाना-पहचाना और आरामदायक लगता है।

क्या मरने का मतलब यह है कि वह नष्ट हो गया? नहीं। इसका मतलब है, सचमुच में जीने के लिए मरना। अगर एक अकेले दाने से भरपूर फसल पैदा होनी है, तो उसे सबसे पहले ज़मीन पर गिरकर मरना होगा। पहले, गेहूँ डंठल से जुड़ा रहता है। फिर किसान उस दाने को डंठल से अलग करता है और उसे जमा करके रख लेता है। ज़रा उस दाने की स्थिति के बारे में सोचिए — वह उस स्रोत से ही अलग हो गया, जिस पर वह अब तक पूरी तरह निर्भर था। सुनने में यह एक मुश्किल स्थिति लगती है, है ना मित्रों?

हो सकता है कि आपमें से कुछ लोग भी ऐसी ही किसी स्थिति से गुज़र रहे हों। शायद आप उन लोगों से अलग हो गए हों, जिन पर आप निर्भर थे। शायद आपको ऐसा लग रहा हो कि आप बिना किसी सहारे के बिल्कुल अकेले खड़े हैं।

हिम्मत मत हारिए! अगर आप अलग हो रहे हैं, तो यह बात समझ लें: कभी-कभी परमेश्वर किसी बड़े मकसद के लिए ही अलगाव होने देते हैं।

इससे पहले कि हम यह देखें कि अलग हुए गेहूँ के दाने के साथ आगे क्या होता है, क्या हम पहले एक बीज की बनावट को समझ लें?

बीज-चोल
(Seed Coat)



बीज के ऊपर का वह बाहरी सुरक्षा कवच जो उसे सुरक्षित रखता है।

भ्रूण
(Embryo):



बीज का वह जीवित हिस्सा जिसमें एक नया पौधा बनने की क्षमता होती है — यानी भविष्य की जड़ और तना।

बीजपत्र
(Cotyledon):



बीज का वह हिस्सा जो भ्रूण के लिए ज़रूरी पोषण जमा करके रखता है।

भ्रूणपोष
(Endosperm):



कुछ बीजों में पाया जाने वाला एक ऊतक (tissue) जो विकसित हो रहे भ्रूण को जमा किया हुआ भोजन देता है।

यह है एक बीज की बनावट। दिलचस्प बात यह है कि जब तक गेहूँ का दाना अपनी बाली (stalk) से जुड़ा रहता है, तब तक जीवन देने वाले ये सभी काम सुप्त (inactive) अवस्था में रहते हैं। दूसरे शब्दों में, एक उज्ज्वल भविष्य की सारी संभावनाएँ बीज के अंदर ही बंद रहती हैं, और सही समय का इंतज़ार करती रहती हैं। अगले महीने के अंक में हम देखेंगे कि अलग होने के बाद गेहूँ के दाने के साथ क्या होता है...



UPSC कोचिंग प्रोग्राम 2026-2027

जीसस रिडीम्स और न्यू लाइफ सोसाइटी द्वारा संयुक्त रूप से प्रस्तुत

DANIEL CIVIL SERVICE कोचिंग प्रोग्राम

IAS या IPS अधिकारी बनने के अपने सपने को साकार करें, हमारे एक साल के गहन कोचिंग प्रोग्राम के साथ, जो मई 2026 से मार्च 2027 तक चलेगा।

कौन शामिल हो सकता है?

- स्कूल के छात्र (कक्षा 8 से 12)
- कॉलेज के छात्र (कोई भी डिग्री)

सुविधाएँ :

- UPSC सिविल सर्विसेज़ (IAS, IPS) के लिए केंद्रित तैयारी
- ऑनलाइन कक्षाएँ सप्ताह में 3 दिन — बुधवार, शनिवार और रविवार को आयोजित की जाती हैं
- किफायती फीस पर उच्च-गुणवत्ता वाली कोचिंग

हमसे संपर्क करें: 9488475315 / 8778443617

Prayer Points - April 2026

आइए प्रार्थना करें!

Jebikalani Vanya

भारत में बढ़ती हिंसा

भारत में, औसतन हर दिन 80 हत्याएँ होती हैं। NCRB की रिपोर्टों के अनुसार, एक वर्ष में 29,193 लोगों की हत्या हुई, जिनमें सबसे ज़्यादा मामले उत्तर प्रदेश में दर्ज किए गए। पीड़ितों का एक बड़ा हिस्सा युवाओं और कामकाजी उम्र के लोगों का है, जो न केवल आत्महत्याओं में, बल्कि युवाओं के बीच हिंसक अपराधों में भी चिंताजनक वृद्धि को दर्शाता है।

आइए हम अपने राष्ट्र के लोगों के घावों के भरने, उनकी सुरक्षा और उनकी मानसिकता में सकारात्मक बदलाव के लिए प्रार्थना करें।



भारत में बढ़ती हिंसा

भारत में, औसतन हर दिन 80 हत्याएँ होती हैं। NCRB की रिपोर्टों के अनुसार, एक वर्ष में 29,193 लोगों की हत्या हुई, जिनमें सबसे ज़्यादा मामले उत्तर प्रदेश में दर्ज किए गए। पीड़ितों का एक बड़ा हिस्सा युवाओं और कामकाजी उम्र के लोगों का है, जो न केवल आत्महत्याओं में, बल्कि युवाओं के बीच हिंसक अपराधों में भी चिंताजनक वृद्धि को दर्शाता है।

आइए हम अपने राष्ट्र के लोगों के घावों के भरने, उनकी सुरक्षा और उनकी मानसिकता में सकारात्मक बदलाव के लिए प्रार्थना करें।

असुरक्षित भोजन और जन-स्वास्थ्य संकट

अधिक मुनाफ़े की होड़ में, मिलावटी और असुरक्षित भोजन का उत्पादन किया जा रहा है; ऐसा अक्सर प्रभावशाली अधिकारियों की लापरवाही और कमज़ोर शासन-व्यवस्था के कारण होता है। वैश्विक स्तर पर, हर साल 55 करोड़ लोग दूषित भोजन के कारण बीमार पड़ते हैं, और 230,000 लोग अपनी जान गँवा देते हैं। इसके अलावा, 3.3 करोड़ लोग स्वस्थ जीवन से वंचित रह जाते हैं।

आइए हम जवाबदेही, जागरूकता और सुधार के लिए प्रार्थना करें, ताकि लोग एक सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण में जी सकें।



अग्नि-दुर्घटनाओं से सुरक्षा

आइए हम प्रार्थना करें कि हमारे राष्ट्र में अग्नि-दुर्घटनाओं के कारण किसी की भी जान न जाए। लोगों की आजीविका सुरक्षित रहे; आइए हम कारखानों, अपार्टमेंटों, तेल भंडारण इकाइयों, स्कूलों, कॉलेजों और वाहनों को परमेश्वर की सुरक्षा में सौंप दें, ताकि वे हर प्रकार के खतरे से सुरक्षित रहें।



आध्यात्मिक सुरक्षा और शांति

आइए हम उन सभी ताकतों के विरुद्ध प्रार्थना में खड़े हों, जो आग और हिंसा के माध्यम से विनाश, भय और अशांति फैलाने का प्रयास करती हैं। ऐसी सभी योजनाएँ पूरी तरह से नष्ट हो जाएँ, और अंधकार का हर वह कार्य समाप्त हो जाए जो शांति के लिए खतरा बनता है।



तमिलनाडु में किशोर अपराधों में वृद्धि

यह एक चिंताजनक तथ्य है कि पिछले पाँच वर्षों में अपराधों में किशोरों की संलिप्तता लगातार बढ़ी है। 2021 में 3% से बढ़कर, यह 2025 में 6.3% हो गया है—यानी लगभग दोगुना। अकेले 2025 में ही, हत्या के 1,661 मामलों में से 104 मामलों में किशोर शामिल थे।

आइए हम प्रार्थना करें कि यह चिंताजनक प्रवृत्ति समाप्त हो, और युवाओं को एक उद्देश्यपूर्ण जीवन, अनुशासन और एक बेहतर भविष्य की ओर सही मार्गदर्शन मिले।



भारत में भूख का संकट

चौंकाने वाली बात यह है कि इथियोपिया, कांगो, नाइजीरिया, पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे देशों की तुलना में भारत में भूख का प्रतिशत अधिक है। लगभग 19.3% बच्चे (लगभग 67 लाख) भूख और कुपोषण से पीड़ित हैं; इनमें से कई बच्चों को तो दिन में एक बार भी ठीक से भोजन नसीब नहीं हो पाता।

आइए हम प्रार्थना करें कि इन बच्चों को पौष्टिक भोजन और सुरक्षा मिले, और उन्हें शक्ति व आशा के साथ आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त हो।

ग्राहम स्टेन्स



इस महीने, हम ग्राहम स्टेन्स के असाधारण मिशनरी दर्शन पर विचार करते हैं, जो ऑस्ट्रेलिया से लम्बी दूरी पर भारत के ओडिशा राज्य में आए थे। उन्होंने कुछ रोगियों और समाज द्वारा दुकराए गए लोगों के बीच रहने का चुनाव किया, और अपना पूरा जीवन मसीह के प्रेम को केवल शब्दों से ही नहीं, बल्कि अपने कार्यों से भी दर्शाने में समर्पित कर दिया।

उनका मिशनरी कार्य (ministry) केवल एक और मिशन असाइनमेंट नहीं था — यह प्रेम की एक गवाही, बलिदान का एक प्रतीक और अटूट विश्वास की एक प्रभावशाली अभिव्यक्ति थी।

ग्राहम स्टुअर्ट स्टेन्स, ऑस्ट्रेलिया के विलियम और एलिज़ाबेथ स्टेन्स के दूसरे बेटे थे। जब वे केवल पंद्रह वर्ष के थे, तब उन्होंने एक ऐसी सभा में भाग लिया जहाँ एक मिशनरी ने तस्वीरों की मदद से भारत में कुछ रोगियों की हृदय-विदारक स्थिति के बारे में बताया। उन तस्वीरों ने उनके हृदय को गहराई से झकझोर दिया। उसी क्षण से, उन्होंने भारत में कुछ रोगियों की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित करने का निर्णय ले लिया।

बाद में, एक और मिशनरी सभा में भाग लेने के पश्चात, उन्हें अपने जीवन में मिशनरी सेवा के लिए परमेश्वर की बुलाहट का स्पष्ट बोध हुआ।

उस बुलावे का जवाब देते हुए, ग्राहम स्टेन्स 'इवैजेलिकल मिशनरी सोसाइटी ऑफ़ मयूरभंज' में शामिल हो गए और 1965 में भारत आकर ओडिशा के आदिवासी समुदायों के बीच सेवा कार्य शुरू किया। जब उन्होंने कुछ रोगियों की दर्दनाक पीड़ा को अपनी आँखों से देखा, तो उनका हृदय करुणा से भर गया। सच्चे प्रेम और पूर्ण समर्पण के साथ, उन्होंने उनकी सेवा करना आरंभ कर दिया।

उन्होंने ओड़िया भाषा के साथ-साथ स्थानीय संताली बोली को भी धाराप्रवाह रूप से सीखने का विशेष प्रयास किया। इसके माध्यम से, वे आदिवासी समुदायों के बीच यीशु मसीह के सुसमाचार को प्रभावी ढंग से साझा करने में सक्षम हो सके।

वर्ष 1983 में, उन्होंने बारीपदा स्थित मिशन के नेतृत्व की जिम्मेदारी संभाली। उसी वर्ष, उन्होंने ग्लैडिस नामक एक मिशनरी नर्स से विवाह कर लिया। ग्लैडिस न केवल एक प्रेममयी पत्नी साबित हुईं, बल्कि मिशनरी कार्य में उनकी एक निष्ठावान सहयात्री भी बनीं। उन दोनों ने मिलकर आदिवासी लोगों को शिक्षा, चिकित्सा सुविधाएँ और सामाजिक विकास के अवसर प्रदान करने के लिए अथक परिश्रम किया।

उनकी समर्पित सेवा के परिणामस्वरूप, हज़ारों लोगों ने मसीह को अपनाया शुरू कर दिया। इस बढ़ती स्वीकार्यता के कारण धार्मिक कट्टरपंथियों की ओर से उन्हें विरोध का सामना करना पड़ा। 22 जनवरी, 1999 की रात को, जब स्टेन्स अपने दो छोटे बेटों के साथ मनोहरपुर स्थित एक मसीही शिविर से लौट रहे थे, तभी एक हिंसक भीड़ ने उन पर हमला कर दिया। उन्हें उनकी गाड़ी के भीतर ही बंद कर दिया गया, और फिर उस गाड़ी में आग लगा दी गई। वे तीनों ही जीवित जल गए। फिर भी, इतनी असहमनीय पीड़ा और उत्पीड़न के बावजूद, कुछ अद्भुत हुआ — कई लोग जिन्होंने सालों तक सुसमाचार को ठुकरा दिया था, उनके बलिदान को देखने के बाद यीशु मसीह की ओर मुड़ने लगे।



ग्राहम स्टेन्स के मुख्य सेवा कार्य

कृष्ट रोग देखभाल सेवा (1982)

भावनात्मक सहारा प्रदान किया।

उन्होंने मयूरभंज ज़िले में कृष्ट रोगियों को चिकित्सा देखभाल, पुनर्वास और

आदिवासी समुदायों के लिए शिक्षा

तक शिक्षा और बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएँ पहुँचाने का काम किया।

उन्होंने ओडिशा के दूरदराज के गाँवों में रहने वाले आदिवासी लोगों

सामुदायिक विकास कार्य

जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में मदद की।

उन्होंने गरीब समुदायों की आजीविका और सामाजिक कल्याण में सहायता करके उनके

ग्राहम स्टेन्स मेमोरियल हॉस्पिटल

ग्राहम की मृत्यु के बाद, उनकी पत्नी ग्लैडिस ने इस मिशन को जारी रखा। 2004 में, उन्होंने गरीब रोगियों को चिकित्सा देखभाल प्रदान करना जारी रखने के लिए राजाबासा में 15 बिस्तरों वाला एक अस्पताल स्थापित किया।

टिमोथी फिलिप मेमोरियल हॉस्टल (2003)

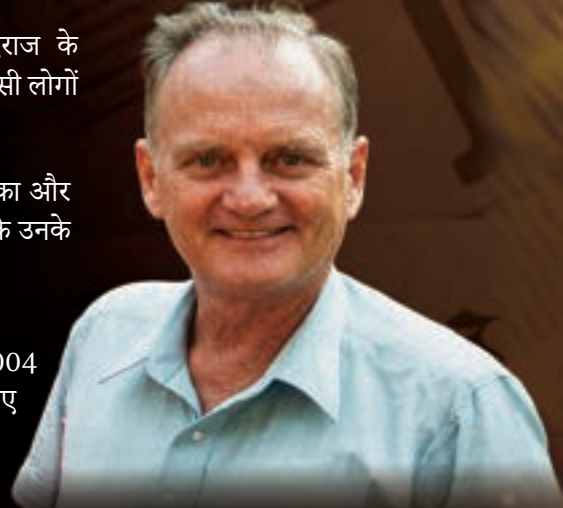
उन्होंने वंचित छात्रों, विशेष रूप से कृष्ट रोग से प्रभावित परिवारों के छात्रों को शिक्षा

और रहने की सुविधा प्रदान करने के लिए एक हॉस्टल भी शुरू किया, जिससे उन्हें एक बेहतर भविष्य बनाने में मदद मिली।

एक ऐसी विरासत जो आज भी बयान करती है अपने पति और दो बेटों को खोने के बाद भी, ग्लैडिस स्टेन्स 2004 तक अपनी बेटी के साथ भारत में ही रहीं, ताकि वे उस काम को पूरा कर सकें जो परमेश्वर ने उनके परिवार को सौंपा था। हालाँकि बाद में वह ऑस्ट्रेलिया लौट गईं, लेकिन उनके बलिदान के माध्यम से शुरू हुई चिकित्सा सेवाएँ और सामाजिक कार्य आज भी उनके प्रेम और समर्पण के एक जीवंत स्मारक के रूप में जारी हैं।

ग्राहम स्टेन्स का जीवन हमें एक शक्तिशाली सत्य की याद दिलाता है: सच्ची मसीहियत केवल वह नहीं है जिसका हम प्रचार करते हैं — बल्कि वह है जिसे हम जीते हैं।

उनका जीवन आज हर युवा से एक प्रश्न पूछता है: क्या हम मसीह की तरह प्रेम करने को तैयार हैं, भले ही इसके लिए हमें कोई कीमत चुकानी पड़े?



किस्मत नहीं, केवल यीशु।



तमिलनाडु के दक्षिणी हिस्से में स्थित तेनकासी में एक मेडिकल परिवार में जन्मे इरविन जोश एक सपना लेकर बड़े हुए— स्वयं एक डॉक्टर बनना। लेकिन ज़िंदगी ने उनके सामने कुछ अप्रत्याशित चुनौतियाँ खड़ी कर दीं। याददास्त खोने और दौरे पड़ने जैसी समस्याओं से जूझते हुए भी, उन्होंने स्टेट बोर्ड सिस्टम में अपनी पढ़ाई जारी रखी और, तमाम मुश्किलों के बावजूद, अपने पहले ही प्रयास में **NEET** परीक्षा पास कर ली। आज, वह एक डॉक्टर बनने के लिए प्रशिक्षण ले रहे हैं। आइए, उनकी कहानी उन्हीं के शब्दों में सुनते हैं।

क्या आप हमें अपने परिवार और बचपन के बारे में कुछ बता सकते हैं?

मेरा जन्म तेनकासी में डॉ. मेशक पीटर और डॉ. शीबा मैगदलीन के घर हुआ था। मेरे माता-पिता दोनों ही डॉक्टर हैं, और मेरी बड़ी बहन अभी MBBS के अंतिम वर्ष में है। एक मसीही परिवार में पले-बढ़े होने के कारण, मुझे बहुत कम उम्र से ही यीशु के बारे में जानने का मौका मिला। मैं कभी भी चर्च जाना नहीं भूलता था, नियमित रूप से बाइबल पढ़ता था, और यहाँ तक कि बाइबल क्विज़ में मैंने कई पुरस्कार भी जीते थे। मेरा पालन-पोषण एक अनुशासित



और धार्मिक माहौल में हुआ। बचपन से ही, परमेश्वर ने मुझे गाने और कीबोर्ड व गिटार जैसे वाद्य यंत्र बजाने जैसी प्रतिभाओं से नवाज़ा था। मेरे माता-पिता ने मुझे इन प्रतिभाओं का उपयोग परमेश्वर की महिमा के लिए करने का मार्गदर्शन दिया।

तो, इसका मतलब है कि आपको यीशु से गहरा प्रेम रहा होगा और आप पूरी लगन से उनके लिए जीते रहे होंगे, है ना?

असल में ऐसा नहीं था। मैं जो कुछ भी करता था, वह अपने माता-पिता के अनुशासन के कारण करता था, न कि परमेश्वर के साथ अपने किसी व्यक्तिगत रिश्ते की वजह से। हालाँकि मैं नियमित रूप से चर्च जाता था, लेकिन परमेश्वर के साथ मेरा कोई सच्चा लगाव नहीं था। चूँकि मैं एक बहुत ही शालीन जीवन जीता था—जैसे कि मैं पार्टियों में नहीं जाता था, गलत लोगों की संगति में नहीं पड़ता था—इसलिए मैंने स्वयं को बस एक "अच्छा मसीही" मान लिया था। लेकिन मुझे यह भी ठीक से समझ नहीं आता था कि 'उद्धार' (Salvation) का असली अर्थ क्या है।

कोविड(COVID) काल के दौरान, "Come Let's Pray" (आओ, प्रार्थना करें) कार्यक्रम के माध्यम से, मुझे मोहन अंकल से यह जानने को



मिला कि 'उद्धार' एक ऐसी चीज़ है जिसकी ज़रूरत हर किसी को होती है। उसी समय मैंने व्यक्तिगत रूप से मसीह का अनुभव किया, अपने पापों का पश्चाताप किया, और यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार कर लिया। उसके बाद ही मैंने सचमुच पूरी ईमानदारी के साथ प्रार्थना करना और बाइबल पढ़ना शुरू किया।

यह तो बहुत ही प्रेरणादायक बात है! अब हमें अपनी पढ़ाई के बारे में कुछ बताइए।

परमेश्वर के अनुग्रह से, मैं स्कूल में हमेशा से ही एक होशियार छात्र रहा हूँ। अपनी 10वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षाओं के बाद, मैंने 'बायो-कंप्यूटर' विषय समूह को चुना, क्योंकि मैं एक डॉक्टर बनना चाहता था। लेकिन 11वीं और 12वीं के दौरान, स्कूल के परीक्षा और NEET की तैयारी के बीच तालमेल बिठाना बहुत मुश्किल था। मैं हमेशा इस बात को लेकर उलझन में रहता था कि अपना समय कैसे व्यवस्थित करूँ—कितना पढ़ूँ, किसे ज़्यादा अहमियत दूँ।



इसके अलावा, मुझे दौरे (fits) पड़ते थे और मुझे रोज़ दवा लेनी पड़ती थी। इसकी वजह से मुझे बहुत नींद आती थी, और मैं ज़्यादा देर तक जाग नहीं पाता था। मैंने इसके लिए प्रार्थना की, और परमेश्वर के अनुग्रह से, 12वीं क्लास के दौरान मैंने दवा लेना बंद कर दिया। अब मैं पूरी तरह ठीक हूँ। हालाँकि, मेरी एक और बड़ी मुश्किल थी—कमज़ोर याददाश्त। तथ्यों, नामों और नंबरों को याद रखना बहुत मुश्किल था। बार-बार दोहराने के बाद भी, मैं चीज़ें भूल जाता था। फिर भी, मैंने पूरे भरोसे के साथ प्रार्थना की: “हे प्रभु, मुझे अपने पहले ही NEET के प्रयास में सरकारी मेडिकल सीट चाहिए। भले ही मेरे 12वीं के नंबर कम क्यों न हों, कोई बात नहीं।”

इन सभी मुश्किलों के बावजूद, क्या आप अपना सपना पूरा कर पाएँ?

सन 2025 में, Jebamalai Achievers (जेबमलाई अचिवेर्स) की एक सभा में प्रार्थना के दौरान, एक बात कही

HILTON MATRIC HR. SEC. SCHOOL OLD COURTALLAM			100% PASS RATE WITH A FIRST CLASS
HEARTY WISHES TO ALL OUR ACING ACHIEVERS AND TEACHERS!			
			EXAMINER SCORES - 1. COMPUTER SCIENCE - 11 2. MATHEMATICS - 10 3. BIOLOGY - 11 4. PHYSICS - 10 5. ACCOUNTANCY - 10 6. ENGLISH - 10
IRWIN JOSEPH M.	BALAKRISHNAN M.	MADHU MITHA S.	
ENGLISH - 100 PHYSICS - 100 BIOLOGY - 100 MATHEMATICS - 100 COMPUTER SCIENCE - 100 TOTAL 500	ENGLISH - 100 PHYSICS - 100 BIOLOGY - 100 MATHEMATICS - 100 COMPUTER SCIENCE - 100 TOTAL 500	ENGLISH - 100 PHYSICS - 100 BIOLOGY - 100 MATHEMATICS - 100 COMPUTER SCIENCE - 100 TOTAL 500	REMARKS: 1. Excellent performance in all subjects. 2. Consistent effort and dedication. 3. Well-prepared and confident. 4. Good communication skills. 5. Strong character and leadership qualities. INTERVIEW MEET AND RECOMMENDATION WILL BE GIVEN.

गई: “परमेश्वर तुम्हें शर्मिंदा नहीं होने देंगे।” मेरी माँ ने उस वादे पर भरोसा किया और इसके लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया। जिस तरह परमेश्वर ने सुलैमान को न सिर्फ बुद्धि दी, बल्कि वह दौलत भी दी जो उसने माँगी नहीं थी, उसी तरह परमेश्वर ने मुझे दोनों चीज़ें दीं—वह भी जिसके लिए मैंने प्रार्थना की थी, और उससे भी कहीं ज़्यादा। उनके अनुग्रह से, मैंने 12वीं बोर्ड परीक्षा में 600 में से 593 नंबर हासिल किए, और स्कूल में पहला स्थान पाया। मुझे भौतिक-विज्ञान (Physics) और कंप्यूटर साइंस (Computer Science) में पूरे 100 नंबर मिले। NEET में, मैंने 720 में से 522 नंबर हासिल किए, और परमेश्वर के अनुग्रह से मुझे एक सरकारी मेडिकल कॉलेज में सीट मिल गई। मैं अभी थूठुकुदी- (Thoothukudi) के सरकारी मेडिकल कॉलेज में पढ़ाई कर रहा हूँ। बहुत से लोगों ने कहा था, “स्टेट बोर्ड” के छात्र NEET पास नहीं कर सकते।” “और अगर कर भी लें, तो पहले प्रयास में तो बिल्कुल नहीं।” उन नकारात्मक बातों ने मेरे मन में डर पैदा करने की कोशिश की। लेकिन मैंने प्रार्थना की: “हे प्रभु, मैं एक और साल पढ़ाई





नहीं करूँगा। मुझे मेरे पहले ही प्रयास में सीट दिलाओ।” और परमेश्वर ने ठीक वही किया जो मैंने माँगा था। उन्होंने मुझे खुशियों से भर दिया!

यह तो बहुत ही अद्भुत है! आज एग्जाम की तैयारी कर रहे छात्रों को आप क्या संदेश देना चाहेंगी?

सबसे पहले—परमेश्वर को वह समय और सम्मान दें जिसके वे हकदार हैं। “विशेष कक्षाओं” के बहाने प्रार्थना या चर्च जाना न छोड़ें। दूसरी बात—अपनी पढ़ाई का समय TV या सोशल मीडिया पर बर्बाद न करें। जब आप सच्ची प्रार्थना को कड़ी मेहनत के साथ जोड़ते हैं, तो परमेश्वर निश्चित रूप से आपको आपकी उम्मीदों से भी बढ़कर सफलता देंगे।



प्रिय विद्यार्थियों, हो सकता है कि इस समय आप अपने नतीजों का इंतज़ार कर रहे हों। हो सकता है कि आप डॉक्टर बनने का सपना देख रहे हों। अपने जीवन और अपनी पढ़ाई में यीशु को सबसे पहले रखें। वे निश्चित रूप से आपकी मदद करेंगे—और आपको उस मुकाम तक पहुँचाएँगे जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी।



इग्नाइटरर्स यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहाँ युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते हैं जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश। आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मजबूत। चलो भी! अपने आप को मजबूत करो, और दूसरों को मजबूत करने के लिए तैयार हो जाइये!

हर पहले रविवार

Mumbai – Dharavi

Timing: 5.00 PM- 7.30 PM

World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दूसरे रविवार

Mumbai - Mulund

Timing: 5PM - 7:30PM

Shekinah New life
Assembly of God church
Vijay nagar, Near Vani
vidyalaya School, Mulund (West),
Mumbai -400080.
9004882470

हर चौथे रविवार

Mumbai-Malad

Timing: 4.00 PM – 6.00 PM

Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)
9664050567 | 9619996976

समाचार

2030 तक भारत को गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ सकता है

एक अंतरराष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्था की चौकाने वाली रिपोर्ट चेतावनी देती है कि 2030 तक भारत को पानी की भारी कमी का सामना करना पड़ सकता है—और इसका असर न सिर्फ रोजमर्रा की ज़िंदगी पर पड़ेगा, बल्कि बड़े पैमाने पर खाद्य उत्पादन पर भी पड़ेगा।

जलवायु परिवर्तन और तेज़ी से बढ़ती आबादी के कारण, देश में पानी की मांग आसमान छूने वाली है। फ़िलहाल, भारत को लगभग 7000 लाख क्यूबिक मीटर पानी की ज़रूरत है, जिसमें से लगभग 85% पानी खेती के लिए इस्तेमाल होता है। लेकिन 2030 तक, इस मांग के दोगुना होने की उम्मीद है, क्योंकि आबादी बढ़कर 1.6–1.7 अरब तक पहुँच सकती है।

इसका मतलब है कि पानी की मांग लगभग 1,498 अरब क्यूबिक लीटर तक पहुँच सकती है, जबकि असल में इसकी आधी आपूर्ति ही उपलब्ध हो पाएगी। नतीजा? एक बड़ा जल संकट जो भारत की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बन सकता है।

• खेती पर खतरा

भारत खेती पर बहुत ज़्यादा निर्भर है, और पानी इसकी रीढ़ है। पानी की कमी का सीधा असर फ़सल उत्पादन पर पड़ेगा।

• खाद्य पदार्थों की कमी और बढ़ती कीमतें

खेती से होने वाले उत्पादन में कमी से खाने-पीने की चीज़ों की किल्लत हो सकती है और भारत को दूसरे देशों से ज़्यादा कीमतों पर ज़्यादा आयात करने पर मजबूर होना पड़ सकता है।



• गिरता भूजल स्तर

कई इलाकों में, भूजल का पहले ही बहुत ज़्यादा इस्तेमाल हो चुका है और वह खत्म होने की कगार पर है, खासकर उत्तरी कृषि क्षेत्रों में।

भले ही पृथ्वी का 70% हिस्सा पानी से ढका हुआ है, लेकिन इसमें से सिर्फ 3% ही ताज़ा पानी है—और इसका ज़्यादातर हिस्सा आसानी से उपलब्ध नहीं है।

• दुनिया भर में लगभग 1.1 अरब लोगों को पहले से ही साफ़ पानी नहीं मिल पा रहा है।

• लगभग 2.7 अरब लोगों को हर साल कम से कम एक महीने तक पानी की कमी का सामना करना पड़ता है।

• लगभग 50% प्राकृतिक जल स्रोत, जो कभी पारिस्थितिकी तंत्र और खेती को सहारा देते थे, अब सूख रहे हैं।

अगर पानी की कमी और बढ़ जाती है, तो यह सिर्फ एक पर्यावरणीय मुद्दा नहीं रहेगा—बल्कि यह एक खाद्य, आर्थिक और जन-स्वास्थ्य संकट में बदल जाएगा।

वक्त की पुकार: भविष्यवाणियाँ सच हो रही हैं

बाइबल हमें साफ़-साफ़ चेतावनी देती है—पूरी धरती पर युद्ध, अकाल, महामारियाँ, भूकंप और झूठे मसीह उठ खड़े होंगे। पाप बढ़ेगा। प्रेम ठंडा पड़ जाएगा। इंसानों के हृदय कठोर हो जाएँगे।

यह यह भी बताती है कि लोग स्वयं से प्रेम करने वाले, मज़ाक उड़ाने वाले और पैसे के लोभी बन जाएँगे; वे परमेश्वर के बजाय अपनी ही इच्छाओं को चुनेंगे।

अभी घटित हो रहे संकेत:

- ▶ युद्ध और विद्रोह: देश एक-दूसरे के खिलाफ उठ खड़े हो रहे हैं, और पूरी दुनिया में संघर्ष तेज़ हो रहे हैं।
- ▶ प्राकृतिक आपदाएँ: अकाल, जानलेवा बीमारियाँ और ज़ोरदार भूकंप दुनिया के अलग-अलग हिस्सों को हिला रहे हैं।
- ▶ प्रेम का ठंडा पड़ना: जैसे-जैसे दुष्टता बढ़ रही है, परिवारों के अंदर का प्रेम भी खत्म होता जा रहा है।
- ▶ मज़ाक उड़ाने वालों का उदय: ज़्यादा से ज़्यादा लोग परमेश्वर को नकार रहे हैं और अपनी मर्ज़ी से ज़िंदगी जी रहे हैं।
- ▶ झूठे भविष्यवक्ता: कई लोग स्वयं के मसीह होने का दावा कर रहे हैं और लोगों को धोखे में डाल रहे हैं।
- ▶ सुसमाचार का विश्वव्यापी प्रसार: यीशु के लौटने से पहले, सुसमाचार धरती के हर देश तक पहुँच जाएगा।

ये सभी संकेत अब दूर की चेतावनियाँ नहीं हैं—ये हमारी आँखों के ठीक सामने सच हो रहे हैं।

हम एक ऐसी पीढ़ी में जी रहे हैं जहाँ पवित्र बाइबल में कही गई बातें ठीक इसी समय पूरी हो रही हैं।

इसलिए, सावधान रहें। जागते रहें।

अपने विश्वास में मज़बूती से खड़े रहें—क्योंकि यह सिर्फ़ इतिहास नहीं है... यह भविष्यवाणियों का सच होना है।

